The Research Dialogue
International Open Access, Peer Reviewed & Refereed Journal
An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 5 | Issue 3 | October 2026
ISSN: 2583-438X (Online)
Impact Factor: SJIF: 5.087, RPRI 4.79/6.69
Website: https://theresearchdialogue.com/

व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

सुनीता चौधरी[1], डॉ. भावना सिंह[2]

[1]शोधार्थिनी, शिक्षक–शिक्षा विभाग, शहीद मंगल पाण्डेय राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय ,मेरठ (उ0प्र0)

[2]एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षक–शिक्षा विभाग, शहीद मंगल पाण्डेय राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मेरठ (उ0प्र0)

DOI: https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i3.28

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Received: 10-09-2026

Accepted: 25-10-2026

Published: 31-10-2026

Corresponding Author:
सुनीता चौधरी

प्रमुख शब्द: व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रम, विद्यार्थी, संवेगात्मक बुद्धि।

OPEN ACCESS

सारांश

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए केवल बौद्धिक क्षमता एवं शैक्षिक उपलब्धि ही पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि संवेगात्मक संतुलन, आत्मनियंत्रण, आत्मविश्वास, सहानुभूति, धैर्य तथा सामाजिक समायोजन जैसे गुणों का भी विशेष महत्व है। संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति को अपनी भावनाओं को पहचानने, समझने, नियंत्रित करने तथा दूसरों की भावनाओं के प्रति संवेदनशील रहने में सहायता प्रदान करती है। यह विद्यार्थियों को शैक्षिक चुनौतियों का सामना करने, उचित निर्णय लेने, समस्याओं का समाधान करने तथा व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में संतुलन बनाए रखने में सहायक हो सकती है। प्रस्तुत अध्ययन में व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में 300 व्यावसायिक एवं 300 गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है। विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि को ज्ञात करने हेतु सुषमा तालेसारा द्वारा निर्मित संवेगात्मक बुद्धि प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है तथा प्राप्तांकों का विश्लेषण क्रान्तिक अनुपात की मदद से किया गया है। अध्ययन के अनुसार, व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का स्तर गैर–व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक है, व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि, गैर–व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के छात्रों की अपेक्षा अधिक पाई गई है तथा व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि, गैर–व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के छात्राओं की अपेक्षा अधिक पाई गई है।

प्रस्तावना –

वर्तमान समय में शिक्षा का स्वरूप निरंतर परिवर्तित हो रहा है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी, संचार तथा रोजगार के विभिन्न क्षेत्रों में हो रहे विकास ने विद्यार्थियों के सामने अनेक नवीन अवसरों के साथ–साथ विभिन्न प्रकार की चुनौतियाँ भी प्रस्तुत की हैं। ऐसी परिस्थितियों में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ–साथ उनकी मानसिक परिपक्वता, आत्मविश्वास, धैर्य, आत्मनियंत्रण तथा दूसरों की भावनाओं को समझने की क्षमता का विशेष महत्व हो गया है। इन सभी विशेषताओं के विकास में संवेगात्मक बुद्धि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति को अपनी भावनाओं को पहचानने, उन्हें समझने, नियंत्रित करने तथा परिस्थितियों के अनुरूप उचित व्यवहार करने में सहायता प्रदान करती है इसलिए वर्तमान शैक्षिक व्यवस्था में विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में उभरकर सामने आया है। मानव जीवन में संवेगों का विशेष स्थान है। प्रसन्नता, दुःख, क्रोध, भय, प्रेम, उत्साह, निराशा, आशा तथा चिंता आदि संवेग व्यक्ति

के दैनिक जीवन और व्यवहार को प्रभावित करते हैं। संवेग व्यक्ति की विचार प्रक्रिया, निर्णय लेने की क्षमता, कार्य करने की प्रेरणा तथा दूसरों के साथ संबंध स्थापित करने के तरीके को प्रभावित कर सकते हैं। जब व्यक्ति अपने संवेगों को उचित रूप से समझने और नियंत्रित करने में सक्षम होता है, तब वह कठिन परिस्थितियों में भी संतुलित व्यवहार करने का प्रयास करता है। इसके विपरीत, संवेगों पर नियंत्रण की कमी के कारण व्यक्ति कभी–कभी आवेश में निर्णय ले सकता है, दूसरों के साथ विवाद कर सकता है अथवा तनावपूर्ण परिस्थितियों का प्रभावी ढंग से सामना करने में कठिनाई अनुभव कर सकता है। विद्यार्थियों के जीवन में इन परिस्थितियों का महत्व और भी अधिक होता है क्योंकि अध्ययनकाल के दौरान उन्हें शैक्षिक प्रतिस्पर्धा, परीक्षा, पारिवारिक अपेक्षाओं, मित्रता, सामाजिक संबंधों तथा भविष्य में रोजगार से संबंधित अनेक परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में संवेगात्मक बुद्धि विद्यार्थियों को अपनी भावनाओं और व्यवहार के बीच संतुलन स्थापित करने में सहायता प्रदान करती है। बुद्धि को सामान्यतः व्यक्ति की सीखने, समझने, तर्क करने, समस्याओं का समाधान करने तथा परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को अनुकूलित करने की क्षमता के रूप में समझा जाता है।

व्यावसायिक एवं गैर–व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक परिस्थितियों, अध्ययन पद्धतियों, प्रशिक्षण संबंधी आवश्यकताओं तथा भविष्य की अपेक्षाओं में कुछ अंतर हो सकते हैं। व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को प्रायः निर्धारित समय में व्यावहारिक दक्षता प्राप्त करने, प्रशिक्षण पूरा करने, पेशेवर मानकों का पालन करने तथा रोजगार के लिए स्वयं को तैयार करने की अपेक्षाओं का सामना करना पड़ता है। इसके कारण कुछ विद्यार्थियों में कार्यभार, समय प्रबंधन और भविष्य के रोजगार से संबंधित तनाव उत्पन्न हो सकता है। वहीं गैर–व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों को विषय की व्यापक समझ विकसित करने, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने, उच्च शिक्षा के अवसर खोजने तथा अपनी रुचि के अनुरूप करियर निर्धारित करने से संबंधित चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। तथापि, इन अंतरों को सभी विद्यार्थियों पर समान रूप से लागू नहीं किया जा सकता, क्योंकि प्रत्येक विद्यार्थी की पारिवारिक पृष्ठभूमि, व्यक्तिगत रुचि, आर्थिक स्थिति, पूर्व अनुभव और अनुकूलन क्षमता अलग–अलग होती है। इसलिए दोनों समूहों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करके यह समझने का प्रयास किया जा सकता है कि पाठ्यक्रम की प्रकृति और उससे संबंधित शैक्षिक परिस्थितियों के संदर्भ में संवेगात्मक बुद्धि के स्तर में कोई उल्लेखनीय अंतर दिखाई देता है या नहीं। विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि उनके शैक्षिक व्यवहार से विभिन्न रूपों में संबंधित हो सकती है। अध्ययन के दौरान एकाग्रता बनाए रखना, समय का उचित उपयोग करना, कठिन विषयों को समझने के लिए निरंतर प्रयास करना तथा असफलता के बाद पुनः प्रयास करना ऐसी क्षमताएँ हैं जिनमें भावनात्मक संतुलन सहायक हो सकता है। परीक्षा के समय चिंता और भय का अनुभव करना सामान्य बात है, लेकिन इन भावनाओं को समझकर उनका उचित प्रबंधन करने वाला विद्यार्थी अपनी तैयारी का अधिक प्रभावी उपयोग कर सकता है। इसी प्रकार, शिक्षक से प्राप्त आलोचनात्मक प्रतिक्रिया को व्यक्तिगत अपमान मानने के बजाय सुधार के अवसर के रूप में स्वीकार करना भी संवेगात्मक परिपक्वता का संकेत हो सकता है। समूह में कार्य करते समय मतभेद उत्पन्न होना स्वाभाविक है लेकिन दूसरों की बात सुनना, अपनी असहमति को उचित ढंग से व्यक्त करना और सामूहिक समाधान खोजने का प्रयास करना सकारात्मक सामाजिक व्यवहार को दर्शाता है। इस प्रकार संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रक्रिया और उनके व्यवहारगत पक्षों को समझने में उपयोगी हो सकता है। हालांकि, शैक्षिक उपलब्धि पर केवल संवेगात्मक बुद्धि का ही प्रभाव नहीं पड़ता बल्कि अध्ययन की आदतें, शिक्षण की गुणवत्ता, संसाधनों की उपलब्धता, पारिवारिक सहयोग तथा अन्य व्यक्तिगत और संस्थागत परिस्थितियाँ भी महत्वपूर्ण होती हैं। प्रस्तुत अध्ययन में व्यावसायिक एवं गैर–व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करने का उद्देश्य इस महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक विशेषता को शैक्षिक संदर्भ में समझना है। इस

अध्ययन के माध्यम से दोनों प्रकार के पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के स्तर का आकलन किया जा सकता है तथा उपयुक्त सांख्यिकीय विधियों के आधार पर उनके बीच अंतर की जाँच की जा सकती है। यदि दोनों समूहों के बीच अंतर पाया जाता है, तो उसकी व्याख्या करते समय पाठ्यक्रम की प्रकृति के साथ–साथ विद्यार्थियों की आयु, लिंग, सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि, पारिवारिक वातावरण, शैक्षिक अनुभव तथा संस्थागत परिस्थितियों जैसे संभावित कारकों पर भी विचार करना आवश्यक होगा। अंततः कहा जा सकता है कि संवेगात्मक बुद्धि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, भावनात्मक संतुलन, सामाजिक संबंधों, समस्या समाधान तथा शैक्षिक अनुभवों को समझने का एक महत्वपूर्ण आधार है। व्यावसायिक एवं गैर–व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की परिस्थितियाँ, आवश्यकताएँ और भविष्य संबंधी अपेक्षाएँ कुछ भिन्न हो सकती हैं, लेकिन दोनों समूहों के लिए अपनी भावनाओं को समझना, दूसरों के प्रति संवेदनशील होना और परिस्थितियों के अनुरूप व्यवहार करना उपयोगी है। इस दृष्टि से "व्यावसायिक एवं गैर–व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि तुलनात्मक का अध्ययन" वर्तमान शैक्षिक संदर्भ में एक प्रासंगिक शोध विषय है, जो विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास के साथ–साथ उनके भावनात्मक एवं सामाजिक विकास को समझने की दिशा में उपयोगी योगदान प्रदान कर सकता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य केवल विद्यार्थियों को पुस्तकीय ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना भी है। विद्यार्थियों की सफलता में बौद्धिक क्षमता के साथ–साथ संवेगात्मक बुद्धि की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। संवेगात्मक बुद्धि से तात्पर्य अपनी भावनाओं को पहचानने, समझने, नियंत्रित करने तथा दूसरों की भावनाओं के प्रति संवेदनशील रहने की क्षमता से है। यह क्षमता विद्यार्थियों को कठिन परिस्थितियों का सामना करने, उचित निर्णय लेने तथा अपने व्यवहार में संतुलन बनाए रखने में सहायता प्रदान करती है। इसलिए व्यावसायिक एवं गैर–व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना आवश्यक है। व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को व्यावहारिक प्रशिक्षण, तकनीकी दक्षता तथा रोजगार संबंधी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जबकि गैर–व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों को विषयगत अध्ययन, प्रतियोगी परीक्षाओं तथा उच्च शिक्षा से संबंधित समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। इन परिस्थितियों में संवेगात्मक बुद्धि विद्यार्थियों को तनाव नियंत्रित करने, आत्मविश्वास बनाए रखने तथा समस्याओं का समाधान करने में सहायता प्रदान कर सकती है। दोनों समूहों का तुलनात्मक अध्ययन उनकी संवेगात्मक विशेषताओं में समानताओं एवं भिन्नताओं को समझने का अवसर प्रदान करता है। संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में भी महत्त्वपूर्ण है। अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखने वाले विद्यार्थी अध्ययन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखने, असफलताओं से सीखने तथा अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए निरंतर प्रयास करने में सक्षम हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त, संवेगात्मक बुद्धि विद्यार्थियों में सहयोग, सहानुभूति, सहिष्णुता तथा प्रभावी संवाद जैसी सामाजिक योग्यताओं के विकास में सहायक होती है। इससे वे अपने सहपाठियों एवं शिक्षकों के साथ बेहतर संबंध स्थापित कर सकते हैं। विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि को समझकर शिक्षकों तथा परामर्शदाताओं को उनकी भावनात्मक आवश्यकताओं, कठिनाइयों और विकास संबंधी संभावनाओं की पहचान करने में सहायता मिल सकती है। इसके आधार पर विद्यार्थियों के लिए उपयोगी परामर्श, समूह गतिविधियों तथा संवेगात्मक विकास कार्यक्रमों का आयोजन किया जा सकता है। साथ ही, यह अध्ययन विद्यार्थियों में आत्म–जागरूकता, निर्णय लेने की क्षमता तथा समायोजन संबंधी योग्यताओं को विकसित करने के लिए उपयोगी आधार प्रदान कर सकता है। शोध की दृष्टि से प्रस्तुत अध्ययन इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इसके माध्यम से व्यावसायिक एवं गैर–व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि की तुलना की जा सकती है। इससे दोनों समूहों के बीच संभावित अंतर की पहचान तथा

आगे के शोध के लिए नई संभावनाओं का विकास हो सकता है। अतः यह अध्ययन विद्यार्थियों के भावनात्मक, सामाजिक एवं शैक्षिक विकास को समझने तथा शिक्षा को अधिक प्रभावी और विद्यार्थी–केंद्रित बनाने की दृष्टि से आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण है।

सम्बन्धित शोध साहित्य अध्ययन

अप्रिलियाना एवं मासी (2025) ने व्यावसायिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन किया। यह शोध इंडोनेशिया के कुपांग नगर के सार्वजनिक व्यावसायिक विद्यालयों में अध्ययनरत 173 विद्यार्थियों पर आधारित था। शोधकर्ताओं ने संवेगात्मक बुद्धि के मापन के लिए 13 कथनों वाले मापन उपकरण का उपयोग किया तथा प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण रैश मापन प्रतिमान के आधार पर किया। अध्ययन में विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का स्तर मुख्यतः मध्यम श्रेणी में पाया गया। कुल विद्यार्थियों में 57.80 प्रतिशत का संवेगात्मक बुद्धि स्तर मध्यम श्रेणी में था। निष्कर्षों से यह भी ज्ञात हुआ कि सकारात्मक संवेगों, दूसरों की भावनाओं को समझने तथा अपनी भावनाओं को पहचानने से संबंधित पक्ष अपेक्षाकृत बेहतर थे जबकि संवेगों के कुछ अन्य पक्षों और अशाब्दिक संवेगों को समझने में सुधार की आवश्यकता पाई गई।

शुआन (2025) ने व्यावसायिक विश्वविद्यालय में अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के समग्र विकास में संवेगात्मक बुद्धि की भूमिका का अध्ययन किया। इस शोध में संवेगात्मक बुद्धि, मनोवैज्ञानिक कल्याण, सामाजिक दक्षता तथा भाषा–अधिगम के बीच संबंधों पर ध्यान दिया गया। निष्कर्षों में यह संकेत मिला कि संवेगों का उचित प्रबंधन विद्यार्थियों के कक्षा में सहभागिता करने, भाषा संबंधी चिंता का सामना करने तथा समूह में सहयोगपूर्वक कार्य करने में सहायक हो सकता है। इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि संवेगात्मक बुद्धि का संबंध केवल शैक्षिक उपलब्धि से ही नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार, आत्मविश्वास तथा मनोवैज्ञानिक कल्याण से भी है। वर्तमान शोध के लिए यह अध्ययन उपयोगी है, क्योंकि व्यावसायिक एवं गैर–व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक विश्लेषण करते समय इन सभी पक्षों को ध्यान में रखना आवश्यक है।

चेन (2026) ने व्यावसायिक शिक्षा में संवेग नियमन तथा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, आत्म–प्रेरणा और अधिगम संतुष्टि के बीच संबंधों का अध्ययन किया। इस शोध में चीन के जियांग्सू प्रांत के तीन व्यावसायिक शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत 436 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि संवेगों को नियंत्रित करने की बेहतर क्षमता का शैक्षिक उपलब्धि, आत्म–प्रेरणा, अधिगम संतुष्टि, सहयोगात्मक अधिगम तथा समस्या–समाधान जैसे पक्षों से सकारात्मक संबंध था।

समस्या कथन

व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना। ।
3. व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनायें

1. व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।
3. व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

आंकड़ा संग्रहण के उपकरण

प्रस्तुत शोध हेतु आंकड़ों के संकलन के लिए मेरठ शहर के व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में बी0टेक0, बी0एड0 तथा डी0एल0एड0 तथा गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में बी0ए0 बी0एससी0 तथा बी0कॉम में अध्ययनरत विद्यार्थियों से प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्त्री द्वारा स्तरीकृत यादृच्छीकृत प्रतिदर्श चयन विधि प्रयोग कर समस्त जनसंख्या से 600 विद्यार्थियों का चयन किया। न्यादर्श के रूप में 300 व्यावसायिक एवं 300 गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

शोध उपकरण :–

विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि को ज्ञात करने हेतु सुषमा तालेसारा द्वारा निर्मित संवेगात्मक बुद्धि प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं परिणामों की व्याख्या :–

विश्लेषण–1 :– अध्ययन के उद्देश्य संख्या – 1 ***"व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन"***, के अन्तर्गत परिकल्पित परिकल्पना $\mathbf{H_{01}}$ ***"व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है"*** का सत्यापन 'CR' परीक्षण के आधार पर किया गया है, जिसके विश्लेषण से प्राप्त परिणाम को तालिका संख्या – 1 में दर्शाया गया हैः–

तालिका संख्या – 1

व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात मान (CR) मान

पाठ्यक्रम	संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	क्रान्तिक अनुपात मान (CR-Value)	.05 सार्थकता, df = 598 पर निष्कर्ष
व्यावसायिक पाठ्यक्रम विद्यार्थी	300	128.60	18.40	3.12	सार्थक
गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रम विद्यार्थी	300	121.30	19.10		

***0.05 सार्थकता स्तर पर 'CR' का सारणी मान = 1.96**

परिणाम की व्याख्या :– उपरोक्त तालिका संख्या 4.01 में 300 व्यावसायिक एवं 300 गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 128.60 एवं 121.30 है, मानक विचलन (σ)

क्रमशः 18.40 एवं 19.10 है तथा स्वतत्रांश 298 के .05 के सार्थकता स्तर पर क्रान्तिक अनुपात का मान 3.12 पाया गया जो कि स्वतत्रांश 598 के .05 के सार्थकता स्तर के सारणीमान 1.96 से अधिक है अर्थात मान सार्थक है।

प्रतिपादित परिकल्पना–1 के अन्तर्गत मान के सार्थक होने की स्थिति में शून्य परिकल्पना–H_{01} निरस्त की जाती है; जो कि यह इंगित करता है कि व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर विद्यमान है।

परिणाम की विवेचना :– उपरोक्त परिणाम इंगित करते है कि व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को प्रशिक्षण के दौरान व्यावहारिक अनुभव, समूह कार्य, समस्या–समाधान, संवाद कौशल तथा कार्यस्थल से संबंधित परिस्थितियों का अधिक सामना करना पड़ता है। ये सभी अनुभव विद्यार्थियों में आत्म–नियंत्रण, सहानुभूति, सामाजिक जागरूकता एवं संवेगात्मक प्रबंधन जैसे गुणों के विकास में सहायक होते हैं। इसके विपरीत, गैर–व्यावसायिक पाठ्यक्रम अपेक्षाकृत अधिक सैद्धांतिक होते हैं, जहाँ संवेगात्मक एवं सामाजिक कौशल के विकास के अवसर सीमित हो सकते हैं। अतः समग्र रूप से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का स्तर गैर–व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक है। यह परिणाम शैक्षिक नियोजन एवं पाठ्यक्रम निर्माण की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह संकेत देता है कि सभी प्रकार के पाठ्यक्रमों में संवेगात्मक बुद्धि के विकास हेतु उपयुक्त गतिविधियों एवं प्रशिक्षण को सम्मिलित किया जाना आवश्यक है।

विश्लेषण – 2 :– अध्ययन के उद्देश्य संख्या – 1 ***"व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन",*** के अन्तर्गत परिकल्पित परिकल्पना H_{02} ***"व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है,*** का सत्यापन 'CR' परीक्षण के आधार पर किया गया है, जिसके विश्लेषण से प्राप्त परिणाम को तालिका संख्या – 2 में दर्शाया गया हैं :–

तालिका संख्या – 2

व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का मान

पाठ्यक्रम	संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	क्रान्तिक अनुपात मान (CR-Value)	.05 सार्थकता, df = 298 पर निष्कर्ष
व्यावसायिक पाठ्यक्रम के छात्र	150	130.20	17.80	2.85	सार्थक
गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रम के छात्र	150	123.10	18.60		

***0.05 सार्थकता स्तर पर 'CR' का सारणी मान = 1.96**

परिणाम की व्याख्या :– उपरोक्त तालिका संख्या 2 में व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 130.20 एवं 123.10 है, मानक विचलन (σ) क्रमशः 17.80 एवं 18.60 है तथा स्वतत्रांश 298 के .05 के सार्थकता स्तर पर क्रान्तिक अनुपात का मान 2.85 पाया गया जो कि स्वतत्रांश 298 के .05 के सार्थकता स्तर के सारणीमान 1.96 से अधिक है अर्थात मान सार्थक है।

प्रतिपादित परिकल्पना–02 के अन्तर्गत मान के सार्थक होने की स्थिति में शून्य परिकल्पना–H_{02} निरस्त की जाती है; जो कि यह इंगित करता है कि व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर विद्यमान है।

परिणाम की विवेचना :– उपरोक्त परिणाम इंगित करते हैं कि व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की प्रकृति अधिक व्यावहारिक, कौशल–आधारित तथा वास्तविक जीवन की समस्याओं से जुड़ी होती है। ऐसे पाठ्यक्रमों में समूह कार्य, संवाद, समस्या–समाधान, निर्णय–निर्माण एवं व्यावसायिक परिस्थितियों का सामना करने के अधिक अवसर मिलते हैं, जो छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि के विकास में सहायक सिद्ध होते हैं। इसके विपरीत, गैर–व्यावसायिक पाठ्यक्रम अपेक्षाकृत सैद्धान्तिक होते हैं, जिनमें भावनात्मक एवं सामाजिक कौशलों के विकास के अवसर सीमित हो सकते हैं। अतः निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि गैर–व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के छात्रों की अपेक्षा अधिक पाई गई है। यह निष्कर्ष शिक्षा–योजना निर्माताओं एवं शिक्षकों के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह संकेत करता है कि सभी पाठ्यक्रमों में संवेगात्मक बुद्धि के विकास हेतु उपयुक्त गतिविधियों एवं अनुभवात्मक शिक्षण को सम्मिलित किया जाना आवश्यक है।

विश्लेषण –3 :– अध्ययन के उद्देश्य संख्या – **3 ''व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन''**, के अन्तर्गत परिकल्पित परिकल्पना H_{03} ***"व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है"***, का सत्यापन 'CR' परीक्षण के आधार पर किया गया है, जिसके विश्लेषण से प्राप्त परिणाम को तालिका संख्या – 3 में दर्शाया गया हैं :–

तालिका संख्या – 3

व्यवसायिक एवं गैर व्यवसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का मान

पाठ्यक्रम	संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	क्रान्तिक अनुपात मान (CR-Value)	.05 सार्थकता, df = 298 पर निष्कर्ष
व्यावसायिक पाठ्यक्रम की छात्राऐं	150	127.40	18.10	2.67	सार्थक
गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रम की छात्राऐं	150	120.60	19.20		

***0.05 सार्थकता स्तर पर 'CR' का सारणी मान = 1.96**

परिणाम की व्याख्या :– उपरोक्त तालिका संख्या 3 में व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 127.10 एवं 120.60 है, मानक विचलन (σ) क्रमशः 18.10 एवं 19.20 है तथा स्वतत्रांश 298 के .05 के सार्थकता स्तर पर क्रान्तिक अनुपात का मान 2.67 पाया गया जो कि स्वतत्रांश 298 के .05 के सार्थकता स्तर के सारणीमान 1.96 से अधिक है अर्थात मान सार्थक है।

प्रतिपादित परिकल्पना–03 के अन्तर्गत मान के सार्थक होने की स्थिति में शून्य परिकल्पना–H_{03} निरस्त की जाती है; जो कि यह इंगित करता है कि व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर विद्यमान है।

परिणाम की विवेचना :– उपरोक्त परिणाम इंगित करते हैं कि व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की प्रकृति अधिक व्यावहारिक, कौशल–आधारित एवं जीवनोपयोगी होती है। इन पाठ्यक्रमों में छात्राओं को समूह में कार्य करना, समस्या–समाधान करना, समय–प्रबंधन, निर्णय–क्षमता तथा कार्यस्थल से जुड़ी भावनात्मक परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। ऐसी परिस्थितियाँ संवेगों को समझने, नियंत्रित करने तथा सकारात्मक ढंग से अभिव्यक्त करने की क्षमता को विकसित करती हैं, जो संवेगात्मक बुद्धि के प्रमुख घटक हैं। इसके विपरीत, गैर–व्यावसायिक पाठ्यक्रम अपेक्षाकृत अधिक सैद्धान्तिक एवं पुस्तकीय ज्ञान पर आधारित होते हैं, जहाँ भावनात्मक एवं सामाजिक कौशलों के विकास के अवसर अपेक्षाकृत कम होते हैं। यही कारण हो सकता है कि इन पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का स्तर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की छात्राओं की तुलना में कुछ कम पाया गया है। समग्र रूप से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि व्यावसायिक पाठ्यक्रम न केवल शैक्षिक एवं व्यावसायिक दक्षताओं के विकास में सहायक हैं, बल्कि वे छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह परिणाम शिक्षा–नीति निर्धारकों एवं शिक्षकों के लिए यह संकेत देता है कि पाठ्यक्रमों में भावनात्मक एवं जीवन–कौशल आधारित गतिविधियों को समाहित करना आवश्यक है, जिससे सभी प्रकार के पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का संतुलित विकास हो सके।

निष्कर्ष

1. व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया गया अर्थात् दोनों प्रकार के पाठ्यक्रम विद्यार्थियों के संवेगात्मक विकास को भिन्न–भिन्न रूपों में प्रभावित करते हैं। व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को प्रशिक्षण के दौरान व्यावहारिक कार्य, समूह गतिविधियाँ, समस्या–समाधान तथा वास्तविक जीवन से जुड़ी परिस्थितियों का अधिक सामना करना पड़ता है, जिससे उनमें आत्म–नियंत्रण, सामाजिक समझ एवं संवेगात्मक प्रबंधन की क्षमता विकसित होती है। इसके विपरीत, गैर–व्यावसायिक पाठ्यक्रम अपेक्षाकृत सैद्धांतिक होने के कारण संवेगात्मक बुद्धि के विकास के अवसर सीमित प्रदान करते हैं।
2. व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया गया अर्थात् व्यावसायिक एवं गैर–व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि में पाया गया सार्थक अंतर यह दर्शाता है कि पाठ्यक्रम की प्रकृति विद्यार्थियों के संवेगात्मक विकास को प्रभावित करती है। व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में छात्रों को व्यावहारिक प्रशिक्षण, समूह कार्य, वास्तविक जीवन की समस्याओं से जूझने तथा संवाद एवं सहयोग की अधिक अवसर प्राप्त होते हैं, जिससे उनमें आत्म–नियंत्रण, सहानुभूति और सामाजिक कौशल का विकास होता है। इसके विपरीत, गैर–व्यावसायिक पाठ्यक्रम अपेक्षाकृत सैद्धांतिक होने के कारण संवेगात्मक बुद्धि के विकास हेतु सीमित अवसर प्रदान करते हैं।
3. व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया गया अर्थात् व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्राओं को प्रशिक्षण के दौरान व्यावहारिक गतिविधियों, समूह कार्य, निर्णय–निर्माण, समस्या–समाधान तथा सामाजिक अंतःक्रियाओं में अधिक भागीदारी का अवसर मिलता है। ये अनुभव छात्राओं में आत्म–नियंत्रण, आत्म–प्रेरणा, सहानुभूति तथा सामाजिक समायोजन जैसे संवेगात्मक गुणों के विकास में सहायक होते हैं। इसके विपरीत, गैर–व्यावसायिक पाठ्यक्रम अपेक्षाकृत अधिक सैद्धांतिक होने के कारण संवेगात्मक कौशलों के विकास हेतु सीमित अवसर प्रदान करते हैं। अतः व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि अधिक विकसित पाई गई।

सन्दर्भ सूची

- भट, एम. एस. (2022). व्यावसायिक एवं गैर–व्यावसायिक स्नातकोत्तर विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का

अध्ययन. जर्नल ऑफ रिसर्च एंड इनोवेशन्स इन एजुकेशन, 8(1), 25–37.

- जियांग, आर. (2024). चीनी माध्यमिक व्यावसायिक विद्यार्थियों में आत्म–प्रभावकारिता और मनोवैज्ञानिक लचीलेपन के बीच संवेगात्मक बुद्धि की मध्यस्थ भूमिका, फ्रंटियर्स इन साइकियाट्री, 15, 1382881. ट्रेमोंटे–फ्रेइडफोंट, एल., वेंगर, एम., एवं फियोरी, एम. (2024). प्रारंभिक व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण में संवेगात्मक बुद्धि और सफलता : स्वास्थ्य सहायक एवं सामाजिक देखभाल कार्यकर्ताओं का अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल फॉर रिसर्च इन वोकेशनल एजुकेशन एंड ट्रेनिंग, 11(2), 146–170.
- गिल्बर्ट, डब्ल्यू., स्टैक, डी. एम., बार्कर, ई. टी., ड्यूबो, ए., सर्बिन, एल. ए., एवं वेरोनो, एम.–एच. (2024). व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त विद्यार्थियों में संवेगात्मक दक्षता एवं सहायता माँगने की प्रवृत्ति : शैक्षिक सफलता के पूर्वानुमानक, जर्नल ऑफ एडल्ट एंड कंटिन्यूइंग एजुकेशन, 30(2), 617–637.
- अप्रिलियाना, आई. पी. ए., एवं मासी, एल. एम. (2024). विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का रैश विश्लेषणरू व्यावसायिक शिक्षा के लिए निहितार्थ, केएनई सोशल साइंसेज।
- शुआन, क्यू. (2025). व्यावसायिक विश्वविद्यालय की अंग्रेजी शिक्षा में मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक दक्षता के संदर्भ में संवेगात्मक बुद्धि और विद्यार्थियों का समग्र विकास, फ्रंटियर्स इन साइकोलॉजी, 16, 1664645.
- चेन, एल. (2026). व्यावसायिक शिक्षा में संवेग नियमन की भूमिकारू शैक्षिक उपलब्धि, आत्म–प्रेरणा एवं अधिगम संतुष्टि पर प्रभाव, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इन्क्लूसिव एजुकेशन।

Cite the Article:

चौधरी,सुनीता, सिंह,डॉ. भावना. (2026). व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन. The Research Dialogue, 5(3), 246–254. DOI: https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i3.28

Disclaimer: The views, opinions, interpretations, analyses, conclusions, recommendations, and statements expressed in this research article are solely those of the author(s) and do not necessarily represent the views, policies, or positions of the Publisher, Chief Editor, Editors, Editorial Board, Reviewers, or their affiliated institutions. The author(s) bear full responsibility for the originality, accuracy, authenticity, and integrity of the manuscript and for ensuring compliance with applicable academic and ethical standards, including those relating to plagiarism, AI-generated or AI-assisted content, copyright infringement, data fabrication or falsification, and other forms of research or academic misconduct.